स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में कक्षागत अन्तर्क्रियात्मक व्यवहार का अध्ययन

अनीता शुक्ला

मानव के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। हमारी चिन्तन प्रकिया के शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में शाश्वत प्रस्थापनाएँ यथा–शिक्षा, संस्कृति, संस्कार, सोच और चिन्तन प्रतिबिम्बित होते हैं। अतः बहुआयामी विचारधाराओं के इन सभी क्षेत्रों में अन्त सम्बन्धों का विश्लेषण किया जाना चाहिए। मानव की चिन्तन प्रकिया में विचारधारा निःसंग रूप से मौजूद रहती है। आधुनिक युग में जनसंचार माध्यम और प्रौद्योगिकी के विकास ने विचारधारा और शिक्षा के अर्न्तसम्बन्धों को तलाशने के लिए प्रेरित किया है। वस्तुतः आज के विश्व के बदलते परिदृश्य में शिक्षा का क्या स्वरूप हो यह अत्यन्त महत्व का विषय है।

शिक्षा का उद्देश्य है ज्ञान कौशल और अभिवृत्ति का विकास करना आज के सन्दर्भ में यदि विचार किया जाय तो औपचारिक, अनौपचारिक, प्रौढ़ शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा आदि के माध्यम से जो भी ज्ञान कराया जा रहा है उन सबका मुख्य उद्देश्य है मानवीय ज्ञान को विकसित करना तथा उसे जीवन में उपयोगी बनाना। इस प्रकार आज की परिस्थितियों में औपचारिक शिक्षा का महत्व बहुत बढ़ जाता है। तथा सभी को शिक्षा प्रदान करने के लिए एक समान विद्यालय उपलब्ध कराना समाज के लिए कठिन कार्य है। ऐसी परिस्थितियों में समाज में विभिन्न प्रकार के विद्यालय खोले गये है जिनका उद्देश्य तो समान है परन्तु उनमें विद्यालय की संरचना, प्रशासन, शिक्षकों के वेतन अन्य शैक्षणिक गतिविधियों के स्तर पर काफी भिन्नता है। परीक्षा परिणामों की ओर भी अगर दृष्टिगत किया जाय तो यह देखने में आता है कि स्ववित्तपोषित विद्यालयों के बालकों का परीक्षा परिणाम अनुदानित बालकों ने परीक्षा परिणामों से कमतर है।

स्ववित्तपोषित विद्यालयों के अध्यापकों में उनमें वेतन, सेवा सुरक्षा आदि को लेकर निरन्तर असन्तोष बना रहता है तथा स्ववित्तपोषित विद्यालय में अध्यापक नियत योग्यताधारी भी नहीं होते है। ऐसी स्थिति में यह जानना आवश्यक हो जाता है कि क्या कक्षागत अन्तःकिया को शिक्षकों की यह दोयम स्थिति प्रभावित करती है।

अध्ययन का उद्देश्य :

प्रस्तुत अध्ययन में स्ववित्तपोषित विद्यालयों के अध्यापकों को आधार बनाकर अन्तर्क्रियात्मक शिक्षण व्यवहार का अध्ययन किया गया है। शिक्षकों के गतिशील व्यवहार को जानने के लिए अधोलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

- स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शिक्षकों (महिला–पुरूष) के शिक्षण व्यवहार के अन्तर्गत वाचिक व्यवहार का अध्ययन करना।
- महिला/पुरूष शिक्षकों की कक्षा में वाचिक व्यवहार के अन्तर्गत अन्तर्क्रियात्मक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

---

* शोध छात्रा ,शिक्षा शास्त्र विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

परिकल्पना :

1. भिन्न–भिन्न वाचिक व्यवहार के प्रयोग से व्यवहार स्वरूपों में भिन्नता पायी जाती है।
2. महिला एवं पुरूष शिक्षकों की अन्तःकियात्मक परिस्थितियॉ भिन्न होती हैं।

अध्ययन की विधि :

अध्ययन हेतु कार्योत्तर शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

समग्र एवं प्रतिदर्श :

प्रतिदर्श के चुनाव हेतु यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया है जिसमें वाराणसी जनपद में संचालित स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों को प्रतिदर्श के रूप में चुना गया। इस प्रकार 50 शिक्षकों को (25 महिला एवं 25 पुरूष) चुना गया है।

अध्ययन का उपकरण :

शिक्षकों के कक्षागत अन्तर्क्रियात्मक शिक्षण व्यवहार के मापन हेतु नेड पलैण्डर्स की दस वर्गीय व्यवस्थित प्रेक्षण की विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन से प्राप्त परिणाम एवं निष्कर्ष निरूपण :

तालिका 1 माध्यमिक विद्यालयों के कक्षागत अन्तर्क्रियात्मक व्यवहार का तुलनात्मक विवरण

क0सं0	विसंकेतन के पद	पुरूष	महिला
1.	शिक्षक वार्ता	84.3 प्रतिशत	86.9 प्रतिशत
2.	छात्र वार्ता	13 प्रतिशत	10.4 प्रतिशत
3.	निःशब्दता	27 प्रतिशत	27 प्रतिशत
4.	शिक्षक अनुकिया अनुपात	62.6 प्रतिशत	70.34 प्रतिशत
5.	शिक्षक प्रश्न अनुपात	16.4 प्रतिशत	13.8 प्रतिशत
6.	छात्र पहल अनुपात	16.1 प्रतिशत	23 प्रतिशत
7.	विषय वस्तु अनुपात	78.9 प्रतिशत	81.6 प्रतिशत
8.	स्थिर स्थिति अनुपात	61.71 प्रतिशत	67.31 प्रतिशत
9.	छात्र स्थिर स्थिति अनुपात	96.1 प्रतिशत	99 प्रतिशत
10.	अप्रत्यक्षता	.31 प्रतिशत	.30 प्रतिशत

तलिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि पुरूष तथा महिला दोनो ही शिक्षकों की शिक्षक वार्ता 84.3 प्रतिशत तथा 86.9 प्रतिशत है जो यह स्पष्ट करता है कि दोनों ही प्रकार के शिक्षक व्याख्यान अधिक देते है। छात्र वार्ता भी 13 प्रतिशत तथा 10.4 प्रतिशत है जिससे स्पष्ट है कि छात्र पहल कम कर रहे हैं। निःशब्दता दोनो ही स्थितियों में 27 प्रतिशत है। पुरूष शिक्षकों की अनुकिया 62.6 प्रतिशत तथा महिला शिक्षकों की 70.34 प्रतिशत है। शिक्षक प्रश्न अनुपात पुरूष तथा महिला शिक्षकों के लिए कमशः 16.4 प्रतिशत तथा 13.4 प्रतिशत है। इससे ज्ञात होता है कि शिक्षण प्रभावशाली नहीं हो पा रहा है क्योंकि पलैण्डर्स का कहना है कि प्रभावशाली शिक्षण हेतु प्रश्न अनुपात 20 प्रतिशत से अधिक होना चाहिए। छात्र

पहल अनुपात पुरूष तथा महिला शिक्षकों के लिए कमशः 16.1 प्रतिशत तथा 23 प्रतिशत है जो कि मानक 35 प्रतिशत से काफी कम है। सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात है कि 68 प्रतिशत से अधिक दोनों ही शिक्षकों (पुरूष 78.9 प्रतिशत तथा महिला 81.6 प्रतिशत)में विषयवस्तु अनुपात उनके विषयवस्तु प्रधान शिक्षण की ओर संकेत करता है। इसी आधात्री के द्वारा स्थिर स्थिति तथा छात्र स्थिर स्थिति का प्रतिशत भी कमशः 96.1 प्रतिशत तथा 99 प्रतिशत है जिससे पता चलता है कि स्थिर स्थिति की दृष्टि से शिक्षण प्रभावशाली नहीं हो पा रहा है जबकि छात्र स्थिर स्थिति का प्रतिशत प्रभावशाली शिक्षण का संकेत कर रहा है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक (पुरूष तथा महिला) विषयवस्तु प्रधान शिक्षण व्यवहार प्रदर्शित कर रहे हैं। तथा लगभग एक ही समान दोनों (पुरूष तथा महिला) के शिक्षण व्यवहार पाये गये है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

- बेस्ट जान डब्ल्यू एण्ड .....(1986) रिसर्च इन एजुकेशन न्यू डेलही प्रेन्टिस हाल ऑफ इण्डिया प्रा0 लि0।
- फ्लैण्डर्स एन (1971) एनालिसिस टिचींग बिहैवियर एडिशन वेसेली पब्लीशिंग कम्पनी।
- कर्लिन्गर, एफ0एन0 (1983) फाउण्डेशन ऑफ बिहैवियोरल रिसर्च (2nd एडिशन) नई दिल्ली, सुरजीत पब्लिकेशन।
- ए0 पिन्सेन्ट (1981) प्रिंसीपल्स ऑफ टीचिंग मेथड, जार्ज जी0 हैरप कं0 लि0।
- पाण्डे के0पी (1997) माडर्न कान्सेप्ट ऑफ टीचिंग बिहैवियर नई दिल्ली अनामिका पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर प्रा0 लि0।
- शर्मा आर0ए0 (2001) टेक्नोलॉजिकल फाउण्डेशन ऑफ एजुकेशन, मेरठ सूर्या पब्लिकेशन्स।
- पुरोहित पी0एन0 (2003) मेथोडोलॉजी ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, जयपुर मंगलदीप पब्लिकेशन्स।

दी जाती है। केन्द्र सरकार ने पर्यावरण की सुरक्षा हेतु विभिन्न योजना की भी शुरूआत की है।

औपचारिक तथा अनौपचारिक पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम :–

पर्यावरण शिक्षा विद्यालय स्तर से लोगों को दिये जाने के साथ साथ गाँव नगर सभी स्थानों के लोगों को औपचारिक ढ़ग से भी पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व का बोध कराना आवश्यक है। इस क्षेत्र में भारत सरकार ने सन् 1980 में पर्यावरण मंत्रालय स्थापित किया है जो कई योजनाओं के विकास और देश की विभिन्न पर्यावरण की परियोजनाओं में सम्बन्ध बनाने के लिए तत्पर है। इस दिशा में जागरूकता लाने के लिए संगोष्ठियॉ, कार्यशालाएं, सामूहिक चर्चा, प्रचार, प्रतियोगिता आदि आयोजित करना आवश्यक है।

पर्यावरण शिक्षा के प्रति शैक्षिक एवं सामाजिक स्तर पर उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है तथा इसमे और गति लाने के लिए पर्यावरण शिक्षा से सम्बद्ध सभी सरकारी एवं गैरसरकारी संस्थाओं को परस्पर एकजुट होकर एक दूसरे के परिपूरक के रूप में कार्य करना होगा। वर्तमान समय में पूरे विश्व को एक साथ मिलकर पर्यावरण संरक्षण के लिए कटिबद्ध होना होगा। पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक तथा सामाजिक दृष्टि से दृढ़ इच्छा शक्ति की नितान्त आवश्यकता है। समाज में रहने वाले सभी वर्ग के लोगों द्वारा इस दिशा में सार्थक प्रयास से ही इस दिशा में आमूल चूल परिवर्तन अवश्यम्भावी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

- भरूचा ई0 (2006) " सामाजिक मुद्दे और पर्यावरण " पर्यावरण अध्ययन, ओरियन्ट लाग मैन, प्रा0 लि0, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश।
- क्लेयर पाल्मर (2003) " ऐन ओवरवीड ऑफ इनवार्यनमेण्टल एथिक्स : ब्लैकवेल पब्लिसिंग बर्लिन।
- लाइट, ए एवं राल्टन ए0 एच0 (2003) "एनवार्यनमेण्टल एथिक्स : एन एन्थ्रोपोलाजी " ब्लैकवेल पब्लिशिंग कम्पनी आक्सफोर्ड, यू0के0।
- सिंघल, एम0 (2008) पर्यावरण पर आसन्न संकट विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में दिये गये वक्तव्य, संस्कृत विद्या धर्म, विज्ञान संकाय बी0एच0यू0, वाराणसी।
- सारस्वत, एम0 एवं गौतम, एस0एल0 : " पर्यावरणीय शिक्षा " भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्यायें –आलोक प्रकाशन, लखनऊ।
- कुरूक्षेत्र नवम्बर (2006) : ग्रामीण विकास मन्त्रालय, नई दिल्ली।
- कुरूक्षेत्र नवम्बर (2007) : उज्ज्वल भविष्य की तलाश : ग्रामीण विकास मन्त्रालय, नई दिल्ली।